पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/24-26 प्रकाशित 16.07.2025 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

दानदाताओं से अपील

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों में सहयोग करने हेतु **खाता संख्या 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया,** घन्टाघर, दिल्ली– 110007, **आई. एफ. एस. कोड** SBIN0001280 पर सीधे भेज कर हमें फोन न. **9810117464** पर एस.एम.एस कर दें या **9868051444** पर googlepay कर दें।

–अनिल आर्य

वर्ष-42 अंक-04 श्रावण-2082 दयानन्दाब्द 201 16 जुलाई से 31 जुलाई 2025 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 16.07.2025, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद चलायेगी श्रावणी पर्व पर युवा संस्कार अभियान

1. **रविवार 3 अगस्त 2025,** प्रातः 9 बजे स्थानः वृन्दावन ग्रीन, साहिबाबाद,उत्तर प्रदेश, संयोजक– सुरेश आर्य, देवेंद्र आर्य बंधु
2. **शुक्रवार 8 अगस्त 2025,** सुबह 11 बजे, स्थानः ग्राम जोन्ती, TPDDL, वोकेशनल सेंटर, दिल्ली देहात, संयोजक– दशरथ भारद्वाज
3. **शुक्रवार 8 अगस्त 2025,** सुबह 10 बजे, स्थानः JPS पब्लिक स्कूल, मकनपुरी, गाजियाबाद, संयोजक– विनोद त्यागी, शुभम त्यागी– 8076266624
4. **शुक्रवार 8 अगस्त, 2025,** सांयकाल 5.00–6.30 बजे तक, स्थानः आर्यन क्लासिक 500/7, गली 5, विश्वास नगर पूर्वी दिल्ली, संयोजक– महेश भार्गव (9711086251)
5. **शनिवार 9 अगस्त 2025**, सुबह 9 बजे, ग्राम बेहरावद अलीगढ़, संयोजक– भुवनेश आर्य, सुनील आर्य, डॉ. संजय
6. **शनिवार 9 अगस्त 2025,** प्रातः 7.00 बजे, छतरी वाला पार्क, नवीन शाहदरा, दिल्ली 110032 संयोजकः महेश शर्मा, अजय चौधरी
7. **शनिवार 9 अगस्त 2025,** प्रातः 9 बजे, मूर्ति देवी आर्य स्कूल K–160, जहांगीर पुरी दिल्ली, संयोजक गजेंद्र आर्य
8. **रविवार 10 रविवार 2025, प्रातः** 8 बजे आर्य समाज महावीर नगर तिलक नगर, दिल्ली, संयोजक– दिनेश आर्य, मायाराम शास्त्री
9. **10 अगस्त 2025 , प्रातः 9 बजे,** समर्पण शोध संस्थान, सेक्टर 5 , राजेन्द्र नगर, साहिबाबाद संयोजक– सुरेश आर्य, कृष्ण कुमार यादव
10. **रविवार 10 अगस्त 2025,** प्रात 11 बजे, स्थानः आर्य समाज बांकनेर, दिल्ली देहात, संयोजक– अरुण आर्य
11. **रविवार 10 अगस्त 2025,** प्रातः 9 बजे स्थानः महर्षि दयानन्द आर्य समाज नांगलोई निकट पानी की टंकी, दि., संयोजक–भोपाल सिंह आर्य
12. **रविवार 10 अगस्त 2025**, प्रातः 8 बजे आर्य समाज संदेश विहार पीतमपुरा दिल्ली, संयोजक– दुर्गेश आर्य, वरुण आर्य
13. **रविवार 10 अगस्त 2025,**दोपहर 3.00 बजे 221, ज्ञान खंड–1, इंदिरा पुरम, संयोजक ममता चौहान
14. **रविवार 10 अगस्त 2025,** प्रात 9 बजे आर्य समाज नगरोटा बगवा हिमाचल, संयोजक कमल आर्य, व्यवस्थापक राकेश कायस्थ
15. **सोमवार 11 अगस्त 2025,** प्रातः 9 बजे स्थानः श्रद्धा मन्दिर स्कूल महर्षि दयानन्द रोड, सैक्टर–87, ग्रेटर फरीदाबाद, संयोजक– डॉ. गजराज सिंह आर्य
16. **सोमवार 11 अगस्त 2025,** प्रातः 10 बजे बी एम दयानन्द माडल स्कूल आर्य समाज माडल टाउन सोनीपत, संयोजक– गीता सहगल, मो. 8950551610, अर्जुन देव दुरेजा
17. **मंगलवार 12 अगस्त 2025,** प्रातः 8 बजे, आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली, संयोजक रामचंद्र सिंह,सुनील खुराना
18. **बुधवार 13 अगस्त 2025,** प्रातः 10 बजे, विजय हाई स्कूल, सिक्का कॉलोनी, सोनीपत, संयोजकः जितेंद्र चावला
19. **वीरवार 14 अगस्त 2025,** सुबह 11.00 बजे, पी 4 ब्लॉक, TP DDL वोकेशनल सेंटर सुल्तान पुरी, दिल्ली, संयोजक– राधा भारद्वाज
20. **शुक्रवार 15 अगस्त 2025,** प्रातः 9 बजे, आर्य समाज गुड़ मंडी, दिल्ली, संयोजक वीरेन्द्र आहूजा
21. **शुक्रवार 15 अगस्त 2025**, प्रातः 8 बजे, स्थानः 221, काल खंड–1, इंदिरा पुरम, गाजियाबाद, संयोजक– यज्ञवीर चौहान
22. **शुक्रवार 15 अगस्त 2025,** दोपहर 3.00 बजे, आर्य समाज सूर्य निकेतन, पूर्वी दिल्ली, संयोजक– यशोवीर आर्य
23. **शनिवार 16 अगस्त 2025,** सुबह 9 बजे आर्य समाज देव नगर, करोल बाग, दिल्ली, संयोजक– सुशील बाली, रोहित
24. **रविवार 17 अगस्त 2025,** प्रातः 9 बजे आर्य समाज पटेल नगर, दिल्ली, संयोजक–रोहित
25. **रविवार 17 अगस्त 2025,** प्रातः 10 बजे, स्थान– सत्य कुटीर, बी– 84/1, उत्तरी छज्जुपुरा, दिल्ली, संयोजक–वेद प्रकाश आर्य
26. **रविवार 17 अगस्त 2025**, प्रातः 10 बजे, स्थान– टीनू पब्लिक स्कूल संगम विहार दक्षिणी दिल्ली, संयोजक– देवदत्त आर्य रामफल खरब
27. **रविवार 17 अगस्त 2025**, शाम 4.00 बजे, स्थानः शंभु दयाल दयानन्द सन्यास आश्रम गाजियाबाद, संयोजक – प्रवीण आर्य, सौरभ गुप्ता

दिल्ली चलो

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के 48 वे स्थापना दिवस पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

दिल्ली चलो

सानिध्यः डॉ. अशोक कुमार चौहान

150 वाँ आर्य समाज स्थापना वर्ष के उपलक्ष्य 'आर्य समाज कल आज और कल'

रविवार 14 सितंबर 2025, प्रातः 9 बजे से दोपहर 2.00 बजे तक

स्थानः आर्य समाज डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली

कृपया अपनी डायरी में नोट कर ले और साथियों सहित पहुंचे।

अनिल आर्य, अध्यक्ष **आनंद चौहान** संरक्षक **अजय चौहान** स्वागत अध्यक्ष **महेन्द्र भाई** राष्ट्रीय महासचिव **धर्मपाल आर्य** कोषाध्यक्ष

दामोदर सावरकर और महात्मा गांधी

– जे. नंदकुमार (28 मई 2021) के लेख का एक अंश

इतिहास में ऐसे नायक कम ही हैं, जिन्हें विनायक दामोदर सावरकर की तरह तीखे और धूर्ततापूर्ण दुष्प्रचार अभियानों का सामना करना पड़ा हो। ये वही सावरकर हैं, जिन्होंने एम.एन. रॉय, हीरेंद्रनाथ मुखर्जी और एस.ए. डांगे जैसे भारत के शुरुआती कम्युनिस्ट नेताओं समेत अनेक राजनीतिक नेताओं और राष्ट्रभक्तों को प्रेरित किया था। लेकिन, अपने पूर्ववर्तियों के उलट नए कम्युनिस्टों ने अपनी आड़ी–तिरछी इतिहास दृष्टि के साथ इस महान क्रांतिकारी की छवि को इस हद तक खराब करने की कोशिश की है कि वे स्वतंत्रता आंदोलन के गद्दार और उसे क्षति पहुंचाने वाले लगने लगे।

हम जानते हैं कि सावरकर के विरुद्ध मुख्य आरोप यह है कि उन्होंने अंदमान जेल में रहने के दौरान अंग्रेजी शासन से क्षमादान पाने के लिए अनेक पत्र लिखे थे। यह ऐसी बात है, जो आपातकाल के बाद के दौर में शुरू हुई थी, जब राष्ट्रवाद का प्रभाव तेजी से बढ़ रहा था। इन स्थितियों से बौखलाए नव वामपंथियों ने सावरकर को शहिंदुत्व के विचार का जनकश बताते हुए उनको निशाना बनाना शुरू किया। इसके लिए उन्होंने गहराई में जाकर आज की बहु–प्रचारित नई खोजें कीं और उनके बारे में आधारहीन बातों तथा तथ्यों एवं सामाजिक विश्वासों को उलटते हुए वैकल्पिक इतिहास गढ़ना शुरू किया।

दिलचस्प है कि एम.एन. रॉय और ई.एम.एस. नंबूदिरिपाद जैसे सावरकर के समकालीन कम्युनिस्ट दिग्गज हिंदुत्व के मुद्दे पर कठोर आलोचना के बावजूद उनका अत्यंत सम्मान करते थे। इसके विपरीत, सत्य को पीछे छोड़कर नए वामपंथी बुद्धिजीवी अपने राजनीतिक आकाओं के दिशा–निर्देशों के अनुसार जी–जान से साक्ष्य के छोटे–छोटे टुकड़ों के सहारे इतिहास का नवलेखन करने में जुटे हैं। सावरकर की आत्मकथा तथा अनेक जीवनियों के आधार पर कहा जा सकता है कि उनका जीवन ऐसे बलिदानों और वीरता से भरा हुआ था, जो भारतीय कम्युनिस्टों के लिए अकल्पनीय है और उनके लिए उसके अनुकरण के बारे में बात ही व्यर्थ है। उनका अतुलनीय क्रांतिकारी जीवन भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के सबसे महत्वपूर्ण घटनाक्रमों में से है।

अपने पत्र यंग इंडिया में 26 मई, 1920 को प्रकाशित लेख सावरकर ब्रदर्स (देखें, कम्प्लीट वर्क्स ऑफ महात्मा गांधी, खंड 20; पृ. 368) में गांधी जी ने लिखा है, भारत सरकार और प्रांतीय सरकारों की कार्रवाई के चलते कारावास काट रहे बहुत से लोगों को शाही क्षमादान का लाभ मिला है। लेकिन कुछ उल्लेखनीय राजनीतिक अपराधी हैं, जिन्हें अभी तक नहीं छोड़ा गया है। इनमें मैं सावरकर बंधुओं को गिनता हूं। वे उन्हीं संदर्भों में राजनीतिक अपराधी हैं, जिनमें पंजाब के बहुत से लोगों को कैद से छोड़ा जा चुका है। इस बीच क्षमादान घोषणा के पांच महीने बीत चुके हैं फिर भी इन दोनों भाइयों को स्वतंत्र नहीं किया गया है।

राजनीतिक कैदियों के लिए निर्धारित प्रारूप में सशर्त क्षमादान की अपील करना उन दिनों एक सामान्य प्रक्रिया थी। महात्मा गांधी के लेखन से यह असंदिग्ध है कि उन्हें तत्कालीन प्रचलन के अनुसार लिखे गए सावरकर के क्षमादान पत्रों के बारे में पता था। उन दिनों अधिकांश राजनीतिक कैदी क्षमादान के लिए आवेदन करते और सम्राट से क्षमादान पाते थे, जिसे बाद में वामपंथियों ने अक्षम्य और अभूतपूर्व अपराध के रूप में प्रचारित किया था।

लेख में गांधी जी ने जी.डी. सावरकर के जीवन के बारे में संक्षेप में लिखा, श्दोनों भाइयों में बड़े, श्री गणेश दामोदर सावरकर का जन्म 1879 में हुआ था, और उन्होंने सामान्य शिक्षा प्राप्त की थी। 1908 में उन्होंने नासिक में स्वदेशी आंदोलन में प्रमुखता से हिस्सा लिया था। इसके लिए उन्हें 9 जून, 1909 को धारा 121, 121ए, 124ए और 153ए के तहत उनकी संपत्ति जब्त करने तथा काला पानी भेजे जाने की सजा दी गई थी और अब वह अंदमान में अपनी सजा काट रहे हैं। इस तरह वह 11 साल जेल में बिता चुके हैं। धारा 121 वह प्रसिद्ध धारा है जिसका संबंध राजद्रोह से है और जिसका उपयोग पंजाब से जुड़े मामलों की सुनवाई के दौरान किया गया था। इसमें न्यूनतम सजा अपराधी की संपत्ति की जब्ती के साथ जीवनभर के लिए काला पानी भेजा जाना शामिल है। 121ए भी ऐसी ही धारा है। 124ए का संबंध देशद्रोह से है। 153ए का संबंध लिखे, बोले या अन्य प्रकार से व्यक्त शब्दों द्वारा विभिन्न वर्गों के बीच दुश्मनी को बढ़ावा देने से है। इससे यह स्पष्ट है कि श्री गणेश सावरकर के खिलाफ लगाए गए सभी अपराध सार्वजनिक प्रकृति के थे। उन्होंने कोई हिंसा नहीं की थी। वे शादीशुदा थे, उनकी दो बेटियां थीं, जो मर चुकी हैं और लगभग 18 महीने पहले उनकी पत्नी की भी मृत्यु हो चुकी है।

जी.डी. सावरकर के बारे में संक्षिप्त विवरण देने के बाद, महात्मा गांधी ने विनायक दामोदर सावरकर का परिचय दिया, श्दूसरे भाई का जन्म 1884 में हुआ था। उनकी ख्याति लंदन में अपने कामकाज के लिए है। पुलिस हिरासत से बचने की सनसनीखेज कोशिश में पोर्टहोल के रास्ते फ्रांसीसी तट पर जहाज से कूद जाने की घटना अभी भी लोगों के दिमाग में ताजा है। उन्होंने फर्ग्यूसन कॉलेज में शिक्षा प्राप्त करने के बाद लंदन में पढ़ाई पूरी की और बैरिस्टर बने। वह 1857 के सिपाही विद्रोह के इतिहास पर एक प्रतिबंधित पुस्तक के लेखक भी हैं। उनके ऊपर 1910 में मुकदमा चलाया गया था, और 24 दिसंबर, 1910 को उन्हें भी उनके भाई के समान सजा मिली। उन पर 1911 में हत्या के लिए उकसाने का आरोप भी लगाया गया था। उनके खिलाफ भी किसी तरह की हिंसा साबित नहीं हुई है। वह भी शादीशुदा हैं और 1909 में उनका एक बेटा हुआ था। उनकी पत्नी अभी जीवित है।श्श सावरकर के पत्रों के कथ्य का वर्णन करते हुए महात्मा गांधी कहते हैं, ''इन दोनों भाइयों ने अपने राजनीतिक विचारों की घोषणा की है और दोनों ने कहा है कि वे कोई क्रांतिकारी विचार नहीं रखते हैं और यदि वे स्वतंत्र किए जाते हैं तो वे सुधार अधिनियम (भारत सरकार अधिनियम, 1919) के तहत काम करना चाहेंगे, क्योंकि वे मानते हैं कि सुधार अधिनियम भारत के लिए राजनीतिक ज़िम्मेदारी हासिल करने की दिशा में काम करने का अवसर देता है।''

गांधीजी आगे लिखते हैं, इससे अधिक महत्वपूर्ण यह है कि मुझे लगता है कि यह कहा जा सकता है कि वर्तमान समय में भारत में कोई हिंसा की संस्कृति के अनुयायी नहीं रह गए हैं। ऐसे में दोनों भाइयों की स्वतंत्रता बाधित करने का एकमात्र कारण यह हो सकता है कि वे श्सार्वजनिक सुरक्षा के लिए खतरा होंश क्योंकि सम्राट ने वायसराय को जिम्मेदारी दी है कि उनकी निगाह में जिन राजनीतिक कैदियों से सार्वजनिक सुरक्षा को खतरा न हो, उनके मामले में सभी प्रकार से शाही क्षमादान की कार्रवाई की जाए।

इसलिए मेरी राय है कि जब तक कि इस बात का कोई पुख्ता सबूत न हो कि पहले ही लंबा कारावास भुगत चुके और शारीरिक रूप से अशक्त हो चुके तथा अपनी राजनीतिक विचारधारा घोषित कर चुके दोनों भाई राज्य के लिए कोई खतरा साबित हो सकते हैं, तब तक वायसराय उन्हें स्वतंत्र करने के लिए बाध्य हैं। वायसराय की राजनीतिक क्षमता में सार्वजनिक सुरक्षा की शर्त पूरी करने पर उन्हें मुक्त करने की बाध्यता ठीक वैसे ही है, जैसे कि न्यायिक क्षमता में न्यायाधीशों द्वारा दोनों भाइयों को कानून के तहत न्यूनतम सजा देनी अनिवार्य थी। उन्होंने आगे यह तर्क भी दिया कि अगर उन्हें किसी भी कारण से कैद में रखा जाना है, तो इसका औचित्य स्थापित करने वाला पूरा बयान जनता के सामने रखा जाना चाहिए।

गांधी जी ने अपने लेख में आगे लिखा, यह मामला पंजाब सरकार के प्रयासों से लंबे कारावास के बाद मुक्त हुए भाई परमानंद के मामले की तुलना में न बेहतर है और न ही बुरा। न ही उनके मामले को सावरकर बंधुओं से इस मायने में अलग देखा जाना चाहिए कि भाई परमानंद ने पूरी तरह से निर्दोषिता का तर्क दिया था। जहां तक सरकार का सवाल है, उसके लिए सभी एक जैसे दोषी हैं क्योंकि सभी को सजा सुनाई गई थी। और, शाही क्षमादान केवल संदिग्ध मामलों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि उन सभी मामलों में लागू है जिनमें अपराध पूरी तरह से सिद्ध हुए हैं। क्षमादान लागू करने की स्थितियां यह हैं कि अपराध राजनीतिक होना चाहिए और वायसराय की दृष्टि में क्षमादान पाने वाले व्यक्ति से सार्वजनिक सुरक्षा को कोई खतरा नहीं होना चाहिए। दोनों भाइयों के राजनीतिक अपराधी होने के बारे में कोई सवाल ही नहीं है। और अभी तक जनता जानती है कि वे सार्वजनिक सुरक्षा के लिए कोई खतरा नहीं हैं। ऐसे मामलों के संबंध में वाइसरीगल काउंसिल में एक सवाल के जवाब में कहा गया था कि वे विचाराधीन थे। लेकिन उनके भाई को बॉम्बे सरकार से इस आशय का जवाब मिला है कि उनके संबंध में कोई और स्मरण–पत्र स्वीकार नहीं किए जाएंगे तथा श्री मोंटेगू ने हाउस ऑफ कॉमन्स में कहा है कि भारत सरकार की राय में उन्हें मुक्त नहीं किया जा सकता। हालांकि, इस मामले को इतनी आसानी से दबाया नहीं जा सकता। जनता को उन सटीक आधारों को जानने का अधिकार है, जिनके आधार पर शाही उद्घोषणा के बावजूद दोनों भाइयों की स्वतंत्रता पर रोक लगाई जा रही है, जबकि यह उनके लिए वैसी ही है जैसे शाही घोषणा में निहित कानूनी शक्ति।

शिक्षाविद् सुरेन्द्र शास्त्री का 81वाँ जन्मोत्सव सम्पन्न

सुरेन्द्र जी समाज के लिए समर्पित व्यक्तित्व है –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

नई दिल्ली, रविवार, 6 जुलाई 2025, कर्मठ आर्य नेता,समाजसेवी सुरेन्द्र शास्त्री का 81 वाँ जन्मोत्सव आर्य समाज लाजपत नगर नई दिल्ली में सौल्लास मनाया गया।वैदिक विद्वान मेघश्याम वेदालंकार ने यज्ञ करवाया। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि मैं शास्त्री जी को 1982 से देख रहा हूँ।आपका जीवन समाज के लिए समर्पित रहा।वरिष्ठ नागरिक मंच,आर्य समाज,पंजाबी समाज में विभिन्न पद पर कार्यरत रहे।आशा नंद पब्लिक स्कूल की स्थापना की। आपके दीर्घ व स्वस्थ जीवन की परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं। विधायक तेजेन्द्र सिंह मारवाह,पूर्व निगम पार्षद सुभाष मल्होत्रा उनके समाज के प्रति दिए योगदान की चर्चा करते हुए अपनी शुभकामनायें प्रदान की।जामपूरी बिरादरी के अध्यक्ष सेखरी ने उनकी उपलब्धियों का विवरण प्रस्तुत किया।कार्यक्रम का कुशल संचालन समाज के प्रधान राजेश मेहंदीरत्ता ने किया। आचार्य विद्याप्रसाद मिश्रा, चन्द्र शेखर शास्त्री, रमेश गाड़ी, अजय कपूर, अजय शास्त्री, भारत भूषण आर्य, ओमप्रकाश छाबड़ा आदि ने अपनी शुभकामनायें प्रदान की और पुष्पा शास्त्री ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा 2020 से 730वां वेबिनार सम्पन्न

धर्म परिवर्तन का मकड़जाल' विषय पर गोष्ठी सम्पन्न

आर्य जनों को समाज में जागृति लानी होगी –डॉ. डी.के गर्ग (अध्यक्ष ईशान इंस्टिट्यूट)

सोमवार 7 जुलाई 2025, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में धर्म परिवर्तन का मकड़जाल विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया।यह कोरोना काल से 729 वाँ वेबिनार था। वैदिक प्रवक्ता डॉ. डी के गर्ग (अध्यक्ष ईशान इंस्टिट्यूट ग्रेटर नोएडा) ने जोर देकर कहा कि आज समाज में बढ़ता पाखंड बाबाओं का मायाजाल आर्य समाज की शिथिलता के कारण है इसके लिए आवश्यक है कि हम स्वाध्याय करें आम जन को जागरूक करें। उन्होंने कहा कि अनेकता में एकता का नारा ठीक नहीं है। संगठन में ही शक्ति है, यही हमें संगठन सूत्र के मंत्र कहते हैं। सृष्टि के एक अरब 97 करोड़ वर्ष तक एक ईश्वर, एक अभिवादन, एक पूजा पद्धति, एक ही धर्म ग्रन्थ था। लेकिन अब लगभग 100 मतमतांतर, 100 प्रकार के मंदिर, 100 अलग अलग बाबाओं के अलावा, मजारों का, सिद्ध बाबाओं का मकड़जाल हिन्दू समाज को दीमक की तरह खोखला कर रहा है। इसीमें से पहले जैन, बौद्ध, ईसाई, मुसलमान, सिख बने और अब कई बाबा जैसे जैसे मजबूत होते जाएंगे हिंदू धर्म से अलग पहचान की मांग करेंगे जैसे कर्नाटक के मातुवा समाज ने कर दी है। इस आलोक में हिंदू अब दो प्रतिशत भी नहीं रहें। आर्य समाज के प्रचारकों का दायित्व काफी बढ़ गया है और युद्ध स्तर पर कार्य करें,सरल भाषा में साहित्य नए ढंग से नए नए विषयों पर लिखा जाए। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन करते हुए कहा कि टीवी चौनल भी पाखंड अन्धविश्वास को बढ़ावा दे रहे हैं।प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने कहा कि युवा पीढ़ी को जागरूक करने से अधिक लाभ मिल सकता है। गायिका प्रवीना ठक्कर, कमला हंस, शोभा बत्रा, सुधीर बंसल, रविन्द्र गुप्ता, आशा रानी, जनक अरोड़ा, मंजू, संतोष शर्मा आदि के मधुर भजन हुए।

'मन को कैसे वश में करे' गोष्ठी सम्पन्न

सफ़लता के मन को काबू रखे –अतुल सहगल

सोमवार 30 जून 2025, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'मन को कैसे वश में करे' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह करोना काल से 728 वा वेबिनार था। वैदिक प्रवक्ता अतुल सहगल ने विषय की भूमिका प्रस्तुत करते हुए, समाज के सामान्य जन के जीवन में इस विषय की महत्ता को सामने रखा स मन हमारे जीवन की धुर्री है। मानव जीवन का हर कार्य उसकी इन्द्रियों द्वारा संपन्न होता है परन्तु मन के द्वारा ही संचालित होता है। क्योंकि मन इन्द्रियों को चलाने वाला है। कार्य सही ढंग से करना हो और उसमें सफलता प्राप्त करनी हो तो मन पर नियंत्रण आवश्यक है। मन को ढीला छोड़ दिया तो यह जीवन को भटकती हुई नाव के सामान बना देता है अथवा ऐसे रथ के सामान बना देता है जिसके घोड़ों की लगाम ढीली हो। मन के जीते जीत है, मन के हरे हार– ऐसी लोकोक्ति है। उन्होंने फिर भगवदगीता के दो श्लोकों का उद्धरण देते हुए मन की चंचलता की चर्चा की और भगवान श्री कृष्ण के वक्तव्य को सामने रखते हुए कहा कि मन को अभ्यास और वैराग्य से वश में किया जा सकता है। इसके बाद वक्ता ने अभ्यास और वैराग्य की भी कुछ विस्तार से चर्चा की स अभ्यास को योगाभ्यास बताते हुए, वक्ता ने वैराग्य को विषयों में आसक्ति का अभाव बताया। वैराग्य को वक्ता ने दूसरे शब्दों का प्रयोग करते हुए सत्यज्ञान की पराकाष्ठा कह दिया स वक्ता ने एक कठोपनिषद का विख्यात वचन भी प्रस्तुत किया जिसमें मनुष्य को एक रथ बताया है, जिसके घोड़े इन्द्रियां हैं, मन घोड़ों की लगाम है और सारथी बुद्धि है स मन पर नियंत्रण करना मौलिक धर्म के दस लक्षणों में एक लक्षण है स इसके बिना जीवन में प्रगति संभव नहीं, जीवन की सदगति नहीं। वक्ता ने मन को वश में करने के व्यवहारिक उपाय सामने रखे स इनमें तप, जप, प्राणायाम, आहार शुद्धि और ध्यान आ जाते हैं। इन सब का वक्ता ने अल्प विवेचन किया स इसी सन्दर्भ में वक्ता ने विवेक अर्थात बुद्धि के सही प्रयोग के महत्त्व की चर्चा की। वक्ता ने यह तथ्य सामने रखा कि मनुष्य को अपना विवेक बढ़ा के बुद्धि बल से मन को नियंत्रित करने का प्रयास करना चाहिए। इसी बात को दूसरे शब्दों में कहें तो योगाभ्यास से मन और बुद्धि की दूरी को मिटाना होगा। प्रयास व अभ्यास से सब कुछ संभव है। मन को वश में करने का यही उपाय है। इसका कोई छोटा व सहज तरीका नहीं। यह तथ्य समझ लेना परमावश्यक है। मन की साधना जीवन के लिए प्रगतिकारक है, जीवन की उद्धारक है। मुख्य अतिथि आर्य नेता राजेश मेहंदीरत्ता व अध्यक्ष सोहनलाल आर्य ने भी मन को काबू करने के उपाय बताए ,परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन करते हुए कहा कि जीवन में सफलता प्राप्त करने के मन को नियंत्रित करना आवश्यक है। प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

124वीं जयंती पर डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी को श्रद्धांजलि

समान आचार संहिता लागू करना डॉ. मुखर्जी को श्रद्धांजलि अर्पित करो –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

राष्ट्रवाद के प्रहरी थे डॉ मुखर्जी– प्रवीण आर्य

रविवार 6 जुलाई 2025, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में भारतीय जनसंघ के संस्थापक डॉ.श्यामा प्रसाद मुखर्जी के 124 वें जन्मोत्सव पर ऑनलाइन विचार गोष्ठी का आयोजन करके उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि देश में समान आचार संहिता लागू करना ही डॉ. मुखर्जी को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। आज समान अचार संहिता लागू करना समय की आवश्यकता है,हमें विश्वास है कि प्रधानमंत्री मोदी जी धारा 370 के बाद इस पुनीत कार्य को भी अपने कर कमलों से करके इतिहास बनाएंगे उन्होने कहा कि आर्य समाज समान आचार संहिता का पुरजोर समर्थन करता है।एक देश में एक समान कानून लागू होने ही चाहिए।डॉ. मुखर्जी अखण्ड भारत के स्वप्न द्रष्टा थे,उन्होंने उस समय जम्मू कश्मीर की परमिट परिपाटी के विरुद्ध संघर्ष का सिंहनाद किया था।उन्होंने राष्ट्र को सन्देश दिया कि एक देश में दो प्रधान,दो विधान,दो निशान नहीं चलेंगे।वे जम्मू कश्मीर को भारत का अविभाज्य अंग बनाने के लिए बलिदान हो गए।उनके बलिदान को सच्ची श्रद्धांजलि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा धारा 370 व 35। समाप्त करके दी गयी है। वह कलकत्ता विश्वविद्यालय के सबसे कम आयु के उपकुलपति बने,उन्होंने पश्चिम बंगाल में हिन्दुओं की रक्षा के लिए उल्लेखनीय कार्य किया।उल्लेखनीय है कि डॉ. मुखर्जी का जन्म 6 जुलाई 1901 को कलकत्ता के अत्यन्त प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था।उनके पिता भी सर आशुतोष मुखर्जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे एवं शिक्षाविद् के रूप में विख्यात थे।अपने पिता का अनुसरण करते हुए उन्होंने भी अल्पायु में ही विद्याध्ययन के क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलताएँ अर्जित कर लीं व 33 वर्ष की अल्पायु में वे कलकत्ता विश्वविद्यालय के कुलपति बने। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद उत्तर प्रदेश के प्रान्तीय अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने कहा कि डॉ.मुखर्जी ने राष्ट्र की एकता अखंडता के लिए अपना बलिदान दिया,उनके कार्य सदियों तक आने वाली पीढ़ियों का मार्ग प्रशस्त करते रहेंगे।वह राष्ट्र वाद के प्रहरी थे। आचार्य महेन्द्र भाई ने डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी के जीवन से युवाओं को प्रेरणा लेने का आह्वान किया। आर्य नेता राजेश मेहंदीरत्ता ने आभार व्यक्त करते हुए डॉ.मुखर्जी को राष्ट्रवाद का प्रतीक बताया। ओम सपरा ने कहा कि डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के आदर्शों पर चलने की आवश्यकता है तभी हम राष्ट्रीय एकता अखंडता को मजबूत रख सकते हैं।

सेतिया परिवार व सत्य भूषण को बधाई

प्रथम चित्र में फरीदाबाद आर्य विदुषी श्रुति सेतिया की सुपुत्री के शुभ विवाह समारोह में पहुंच कर आशीर्वाद दिया। द्वितीय चित्र में केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सत्य भूषण आर्य को प्रोन्नति कर बिहार के जिला बाका के प्रधान जिला व सत्र न्यायाधीश बनने पर हार्दिक बधाई एवं जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद की शिक्षक टीम

महेन्द्र भाई गुरुकुल तातारपुर में

चौधरी शीशपाल जी अध्यक्ष, डॉ प्रेम पाल जी प्राचार्य श्री भगतराम जी प्रबन्धक गुरुकुल महाविद्यालय तातारपुर, श्रीमती अलका निम संयोजिका नमामि गंगा योजना उ. प्र, स्वामी अखिलानंद जी, भारत भूषण ग्रोवर, सचिन सचदेव, रमेश पाहवा, विजय गोयल, पवन अग्रवाल, शिवकुमार ग्रोवर, महेन्द्र भाई। यह कार्यक्रम गुरुकुल महाविद्यालय तातारपुर, हापुड़ के स्थापना दिवस, उपनयन–वेदारम्भ व समावर्तन संस्कार के उपलक्ष्य में 10 जुलाई को सम्पन्न हुआ।

जहां होता है भरपूर काम और प्रभु का गुणगान आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**, 2199/63,नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 **मो.**: 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970